मिट्टी की पुकार।

विज्ञान की आसमान में तैरते है,
मानव का अनोखा सोचें।
प्रगति की सागर में लहरते है,
मनुपुत्र का अद्भुत कारवाईयाँ।
लेकिन मिट्टी के भीतर रहते है,
मानविकता की असली जड़ियाँ।

हैरानी की इलाकों में झूलते है,
मनु की सरगात्मक सृष्टियाँ।
आधुनिकता की पहाड़ों में नाचते है,
लोगों की रोचक आदरशों।
लेकिन ज़मीन की अंदर बहती है,
मानविकता की निर्मल नदियाँ।

पुरानी ज़मान की अंदर से,
सामाजिक रूढ़ियाँ की अंधकार से,
आती है नया मानव
नया ज़मान की रोशनी में।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

Item Code: 958 Participant Code: 045

पलती है नया मनुष्य
विजय की सुनहरी रास्ते में।

हत्याओं की सिलसिला लांघकर,
दौडती है मानव, घोड़े जैसे।
सामाजिक समस्याओं की इमारतें पारकर
आगे बढ़ती है मानव, मछली जैसे।
लेकिन, कहाँ है वह सुंदर वातावरण?
कहाँ है वह साफ़ जलाशयों?

कहाँ है वह सच्चाई की फूलों?
कहाँ है वह प्यार की पेड़ों?
कहाँ गया वह मेहनत का खेतें?
कहाँ गया वह सहानुभूति का पौधे?
कहाँ गया वह प्रकृति माता?
कहाँ है वह मिट्टी की जादू?

मेहनत की पसीने से
बढ़ते विश्वास की सुंदरता,
थके-मांदे रातों से

सजते खुशी की खुबसूरती,
लाल-लाल खून की बूँदें
से जीते आज़ादी की ऊँचाई,।

कहाँ गई ? कहाँ गई ?
यह मानविकता की हरकतें।
कहाँ गई ? कहाँ गई ?
यह मानव का असली जीतें।
मिट्टी की जादु कहाँ गई,
संसार की खुशी कहाँ गई।

काला बनी ताल-तालबों,
मलिन बनी जीव वायु,
सुखा बनी जिंदगी की अमृत।
मिट्टी अपनी संतानों को
रोते रोते पूछते हैं ?
"माता की हृदय में तलवार मत डालो"।

प्रकृति पूछते हैं
इन सब का अर्थ क्या है

प्रकृति कहते है
मिट्टी से ही तुम जनम लिया,
वह मिट्टी को भी तुम मृत्यु दिया।
लेकिन मानव अभी भी....

मिट्टी हमारी पहला मैदान
मिट्टी हमारी पहला विद्यालय
मिट्टी हमारी पहला खिलौना
मिट्टी से हम सफ़र शुरू करती
और मिट्टी में भी हम वापस आऊँगाँ।
लेकिन मानव अभी भी।

खेत में ~~आ~~ गोदकर, गुठलियाँ बोकर
बालकों जैसे पानी लेकर
छोटी बालिका जैसे परिखालन करते
हमारी पूर्वजों बनाती है
एक सुंदर-कोमल परिस्तिथि,
एक साफ़-सीधे वातावरण।

जब सुन्दरी खेतें दिखाई,

तब उड़ती है कर्षक की मन में
आनंद की फुलझाड़ियाँ।
जब लेते है धरती, उसकी मिट्टि की जादु
तब लहरते और नाचते है,
मेहनतवालों के मन में रंगीले तितलियाँ।

मानव की असली खुन है,
मिट्टि की खुशबु।
मानव की सुंदर माँ है,
ज़मीन की रंग।
मानव की अनोखा भाव है
मिट्टि की अमूल्य सुविधा।

उड़ती है मानव, मिट्टि से
आगे बढ़ती है मानव ज़मीन पर
लेकिन, इस पल में, उपेक्षा करके
जाते है बुलबुला जैसे सुख के पीछे।
माँ को छोड़कर जाते है
नैमिषिक सुविधा के पीछे।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
തിരുത്തി
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

मिट्टी पुकारते है कि वापस जाऊँ।
सुंदर खेतों और बागों बनाओ।
प्रकृति के प्रति की क्रूरता रुको।
और सोचो भविष्य के लिए।
तुम्हारी पूर्वजों तुमको लेते
एक अनोखा जीवन है मिट्टी।

मिट्टी की अंत और अनंत पुकार,
हमारी वापसी के लिए,
मिट्टी की निरंतर और सार्थक
पुकारें, हमारी समझाई के लिए।
मिट्टी पुकारते है कि वापस जाऊँ।
मुझे आस्वादन करो और खुशी बनाओ।

मिट्टी पुकारते है कि,
हरा पेड़-पौधे से सजते पहाड़ों बनाओ।
हवा में नाचते सुनहरी खेतों बनाओ।
मिट्टी पुकारते है कि,
बहती-बहती निर्मल नदियाँ बनाओ।
और ठंडी हवा को आलिंगन करो।

मिट्टी की पुकार,
आज का नया पीढ़ी की ओर है।
आलसी बनी कल की नागरिक के प्रति है।
मिट्टी की पुकार,
नशा से जीवन में नुकसान पड़ा
विवेकरहित युवा पीढ़ी की ओर है।

प्रकृति को प्यार करने पर
जादू बनने केलिए आओ नया ज़मान।
मिट्टी में निहित जादू
खोलने की महसूस केलिए
आओ नया पीढ़ी।
आओ हम साथ-साथ अद्भुत रच दूँ।

धरती की खून से सजते गलियाँ,
दर्द से छिलकना लोगों,
इससे पुकारते मिट्टी
रुको इस दयाहीनता
और वापस आओ मिट्टी से।
असली मानव बनो।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

डिजिट्टल युग से आओ,
मिट्टी की गरमी वसंत से।
आओ नया पीढ़ी
मेहनत को महसूस करने केलिए।
मिट्टी ही पुकारते है,
पुरानी सच्चाई ~~को~~ केलिए आओ।

पुरानी लोगों की रास्ता से
मानविकता को समझाने और
पुरानी की मूल्यों को
मिट्टी से जानने केलिए
पुकारते मिट्टी
आओ सच्चा मानव बनो
मिट्टी का पुत्र बनो।